HIN3B18b

महादेवी वर्मा (१९०७-१९८७)

१ - स्मृति

विस्मृति तिमिर में दीप हो
भवितव्य का उपहार हो ;
बीते हुए का स्वप्न हो
मानव हृदय का सार हो ।

तुम सान्त्वना हो दैव की
तुम भाग्य का वरदान हो ;
टूटी हुई झंकार हो
गत काल की मुस्कान हो ।

उस लोक का संदेश हो
इस लोक का इतिहास हो ;
भूले हुए का चित्र हो
सोयी व्यथा का हास हो ।

अस्थिर चपल संसार में
तुम हो प्रदर्शक संगिनी ;
निस्सार मानस कोष में
हो मञ्जु हीरक की कनी ।

दुर्दैव ने उर पर हमारे
चित्र जो अंकित किए ;
देकर सजीला रंग तुमने
सर्वदा रञ्जित किए ।

तुम हो सुधाधारा सदा
सूखे हुए अनुराग को ;
तुम जन्म देती हो सखी !
आसक्ति को वैराग्य को ।

तेरे बिना संसार में
मानव हृदय स्मशान है ;
तेरे बिना हे संगिनी !
अनुराग का क्या मान है ?

२ - < नीरजा मधुर मधुर मेरे दीपक जल

युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन ;
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल !

पुलक-पुलक मेरे दीपक जल !
सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण,
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय न जल पाया तुझमें मिल !

सिहर-सिहर मेरे दीपक जल !
जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेह-हीन नित कितने दीपक ;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल !

विहँस-विहँस मेरे दीपक जल ।
द्रुम के अंग हरित कोमलतम,
ज्वाला को करते हृदयंगम ;
वसुधा के जड़ अन्तर में भी,
बन्दी है तापों की हलचल !

बिखर-बिखर मेरे दीपक जल !
मेरे निश्वासों से द्रुततर,
सुभग न तू बुझने का भय कर ;
मैं अंचल की ओट किये हूँ,
अपनी मृदु पलकों में चंचल ।

सरल सरल मेरे दीपक जल !
तू जल जल जितना होता क्षय,
वह समीप आता छलनामय,

मधुर मिलन में मिट जाना तू -
उसकी उज्ज्वल स्मित में घुलखिल !

मदिर मदिर मेरे दीपक जल !
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

सुभद्रा कुमारी चौहान (१९०४-१९४८)

१ - **जलियाँवाले बाग़ में वसंत**

यहाँ कोकिला नहीं, काक हें शोर मचाते ।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते ॥
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से ।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे ॥

परिमल-हीन पराग दाग़-सा बना पड़ा है ।
हा ! यह प्यारा बाग़ खून से सना पड़ा है ॥
आओ प्रिय ऋतुराज ! किन्तु धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना ॥

वायु चले पर मन्द चाल से उसे चलाना ।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना ॥
कोकिल गावे, किन्तु राग रोने का गावे ।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे ॥

लाना सँग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले ।
हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ-कुछ गीले ॥
किन्तु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना ।
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय-परिवार देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ॥
तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किन्तु
बहुत धीरे-से आना ।
यह है शोक-स्थान
यहाँ मत शोर मचाना ॥

२ - **वीरों का कैसा हो वसंत ?**

आ रही हिमाचल से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची-पश्चिम, भू-नभ अपार
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ?

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु, वसुधा पुलकित अंग-अंग
हैं वीर-वेश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान
मिलने आये हैं आदि अन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ?

गल बाँहें हों, या हो कृपाण
चल-चितवन हो, या धनुष-बाण
हो रस-विलास, या दलित-त्राण
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत ?

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके ! तुझ में क्यों लगी आग ?
ए कुरुक्षेत्र ! अब जाग, जाग
बतला अपने अनुभव अनन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ?

हल्दी घाटी के शिला खंड ।
ए दुर्ग ! सिंह गढ़ के प्रचंड !
राणा-ताना का कर घमंड
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भूषण अथवा कवि चन्द नहीं
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बंधी, स्वच्छन्द नहीं
फिर हमें बतावे कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ?

३ - **बिदा**

"गिरफ़्तार होने वाले हैं,
आता है वारंट अभी ।"
धक्-सा हुआ हृदय, मैं सहमी
हुए विकल आशंक सभी ॥

किन्तु सामने दीख पड़े
मुस्कुरा रहे थे खड़े-खड़े ।
रुके नहीं, आँखों से आँसू
सहसा टपके बड़े-बड़े ॥

"पगली, यों ही दूर करेगी
माता का यह रौरव कष्ट ?"
रुका वेग भावों का, दीखा
अहा ! मुझे यह गौरव स्पष्ट ॥

तिलक, लाजपत, गाँधीजी भी
बन्दी कितनी बार हुए ।
जेल गये जनता ने पूजा,
संकट में अवतार हुए ॥

जेल ! हमारे महमोहन का
प्यारा पावन जन्म-स्थान !
तुझको सदा तीर्थ मानेगा
कृष्ण-भक्त यह हिन्दुस्थान ॥

मैं पुलकित हो उठी ! यहाँ भी
आज गिरफ़्तारी होगी ।
फिर जी धड़का, क्या भैया की
सचमुच तैयारी होगी ॥

आँसू छलके, याद आ गयी,
राजपूत की वह बाला ।

जिसने बिदा किया भाई को
देकर तिलक और माला ॥

सदियों सोयी हुई वीरता
जागी, मैं भी वीर बनी ।
जाओ भैया, बिदा तुम्हें
करती हूँ मैं गम्भीर बनी ॥

याद भूल जाना मेरी
उस आँसूवाली मुद्रा की ।
कर लो अब स्वीकार बधाई
छोटी बहिन "सुभद्रा" की ॥

४ - ठुकरा दो या प्यार करो

देव ! तुम्हारे कई उपासक,
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे,
धूमधाम से, साज़बाज़ से,
मुक्ता-मणि बहुमूल्य वस्तुएँ,
मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी,
फिर भी साहस कर मन्दिर में,
धूम-दीप-नैवेद्य नहीं है,
हाय ! गले में पहनाने को,
स्तुति मैं कैसे करूँ कि स्वर में
मन का भाव प्रकट करने को,
नहीं दान है नहीं दक्षिणा,
पूजा की विधि नहीं जानती
पूजा और पुजापा प्रभुवर,
दान दक्षिणा और निछावर,
मैं उन्मत्त प्रेम का लोभी,
जो कुछ है वह यही पास है,
चरणों पर अर्पण है,
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,

कई ढंग से आते हैं ।
कई रंग की लाते हैं ॥
वे मन्दिर में आते हैं ।
लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं ॥
जो कुछ साथ नहीं लायी ।
पूजा करने को आयी ॥
झाँकी का शृंगार नहीं ।
फूलों का भी हार नहीं ॥
मेरे है माधुर्य नहीं ।
मुझमें है चातुर्य नहीं ॥
ख़ाली हाथ चली आयी ।
फिर भी नाथ ! चली आयी ॥
इसी पुजारिन को समझो ।
इसी भिखारिन को समझो ॥
हृदय दिखाने आई हूँ ।
इसे चढ़ाने आई हूँ ॥
इसको चाहो तो स्वीकार करो ।
ठुकरा दो या प्यार करो ॥